१११. मानव ही सुखी होना चाहता है, समझदारी इसकी पूर्व भूमि है

११-१०-१३

मानव सुखी होना समझदारी से होता है | समझदारी ज्ञान से होता है | ज्ञान ही विवेक पूर्वक विज्ञान विधि से कार्य-व्यवहार में आता है; जिसको मानव चेतना कहते हैं | यही व्यवहारिक विज्ञान है | मानव चेतना विधि से ही सर्वमानव अथवा सर्वदेश कालीय मानव विकसित चेतना का प्रमाण होता है | इसको भले प्रकार से जाँचा है | तभी विकल्प प्रस्तुत किया है | विकल्प के अनुसार मानव चेतना के मूल में समझदारी होना, समझदारी मूल चेतना होना, मूल चेतना ही परम्परा होना, परम्परा में अखण्डता सार्वभौमता का प्रमाण होना पाया गया | इसी क्रम में विकल्प का प्रस्तुति है | विकल्प विधि से मानव अपने विकसित चेतना विधि से जीने से अपराध और भ्रम मुक्ति होती है | इसको भले प्रकार से जाँचा है | आगे इसका परम्परा होना आवश्यक है | विकसित चेतना विधि से केवल मानव अपने आचरण को पहचान पाता है | मानव अपने आचरण विधि से मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना को प्रमाणित करता है | ऐसा समझा गया, जी के देखा गया |

विकसित चेतना ही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप में प्रमाणित होता है | दिव्य चेतना अनुभवमूलक विधि से, देव चेतना विचार विधि से, न्याय विधि अर्थात व्यवहार विधि से मानव चेतना प्रमाणित होता है | विचार विधि से समाधान प्रमाणित होता है | दिव्य चेतना विधि से अनुभव प्रमाणित होता है | मानव चेतना और देव चेतना के मूल में भी न्याय धर्म सत्य सहज समझ ही रहता है | न्याय धर्म सत्य एक समूह है, अनुभव का, ज्ञान का | ये कोई अलग होते नहीं | इनको अलग करना, भ्रमित मानसिकता का ही प्रकाशन है | अभी मानव खंड खंड में वस्तु को देखता है | विखंडन विधि आधुनिक विज्ञान से लोकव्यापिकृत हुआ है | जबकि वास्तविकता सम्पूर्ण ही होता है | धर्म सम्मत इच्छा-विचार के बिना न्यायपूर्ण व्यवहार होता नहीं | सत्य समझे बिना धर्म समझ में आता नहीं | सत्य, व्यापक सत्ता में संपृक्त भौतिक रासायनिक प्रकृति एवं अमरत्व सम्पन्न चैतन्य जीवन ही है | इस ढंग से मानव चेतना में न्याय प्रधान धर्म सत्य ज्ञान सहित न्याय पूर्वक जीना, देव चेतना में धर्म प्रधान सत्य सम्मत ज्ञान सहित धर्म पूर्वक जीना, दिव्य चेतना में सत्य पूर्ण ज्ञान सहित सत्य प्रधान विधि से धर्म एवं न्याय पूर्वक जीना बनता है | यही अवधारणा, बोध एवं अनुभव सहज महिमा है | यही तीनों चेतना को विकसित चेतना नाम दिया | यही अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित होता हुआ देखा गया है | यही अनुभव प्रमाण, विचार प्रमाण, व्यवहार प्रमाण नाम दिया | फलस्वरूप दिव्य, देव, मानव चेतनाएं प्रमाणित होता हुआ देखा गया है | अनुभव के बिना प्रमाण पूरा होता नहीं |

ये सब जांचने के बाद विकल्प का प्रस्तुति हुई; जिससे अखण्डता, सार्वभौमता का प्रमाण होना है | यह हर व्यक्ति का संयोग से होता है | हर देश काल में व्यक्ति का आहार पद्धति के बारे में सीखा है शाकाहार | शाकाहार जहां होता नहीं है, वहाँ पहुँचाने की बात आती है | उसके लिये यातायात ही प्रधान बात है | यातायात का सुगमता आज प्राप्त है; जिसमें से तेल ही एकमात्र मुद्दा है | खनिज तेल थोड़े दिन चलने वाला है | सब दिन चलने के लिये विधि बताया है | हर गाँव में तेल की आवश्यकता कितना है, यह विकसित चेतना सम्पन्न हर गाँव में समझ में होता है | उतना तेल को उसी गाँव में तैयार कर लेने की सलाह है | स्वराज्य विधि से जीने के लिये तेल की आवश्यकता तो बनता है | कुछ यंत्रों के लिये, कुछ ऊर्जा के लिये | ऊर्जा का मतलब प्रकाश और यंत्रों का चालन से है | इसका आपूर्ति के तादाद हर गाँव में समझ में आता है; जिसका आपूर्ति के लिये हर गाँव में अथवा हर ग्राम पंचायत में एक तेल तैयार करने वाला व्यवस्था को स्थापित करना है | आज की सरकारी व्यवस्था

यही है | इसको छोड़ करके केवल पैसे को आवंटित करने वाले काम से केवल अपराध, अपव्यय ही होना है | इस प्रकार मानव अपने में सुरक्षित होने का काम शुरू कर सकता है | तेल भी एक भाग है सुरक्षा में | सुरक्षा सभी देश काल में मानव के लिये आवश्यक है | विकल्प का लोकव्यापीकरण इसके साथ-साथ होना आवश्यक है | लोकव्यापीकरण विधि से ही जिम्मेदारी, भागीदारी होती है | विकल्पात्मक विधि से अर्थात जागृत चेतना विधि से ही मानव अपने मानवत्व के साथ जी पाता है | मानवीयता मानव का स्वत्व है | मानवीयता विधि से जीने से अखण्ड समाज की सम्भावना बनती है | परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था की सम्भावना बनती है | हर परिवार व्यवस्था में भागीदारी करे, इसके लिये सुझाव दिया है- हर मनुष्य समझदार हो | समझदारी का कार्यक्रम शिक्षा विधि से होना देखा गया है |

शिक्षित व्यक्ति ही समझदार हो सकता है | आज का शिक्षा में केवल अपराध और उन्माद तैयार हुआ | उन्माद भाग में लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्माद होना देखा गया | अपराध विधि से युद्ध और संघर्ष होना देखा गया है | इस ढंग से दो प्रकार से अपराध, तीन प्रकार से उन्माद कहा है | उन्माद को वैध मान लिया, संविधान विहित माना | इस धरती पर एक सौ से अधिक संविधान तैयार हुआ | सभी संविधान इन पांच भागों को वैध माना | इस वैधता से मानव में कहाँ तक न्याय होगा | एक सौ से अधिक संविधान हुआ, एक सौ से अधिक सुप्रीम कोर्ट हुआ, विद्वान हुए | इसके वावजूद न्याय का गंध नहीं आया | न्याय कार्य व्यवहार में क्या होगा, इसको बताना बना नहीं, शिक्षित करना बना नहीं | व्यवस्था तो अति दूर रही | सर्वप्रथम शिक्षा ही होगा | शिक्षा के मूल में अनुसंधान विधि होगी | अनुसंधान किसी एक व्यक्ति से होगा जिसका अनुकरण से लोकव्यापीकरण होना स्वाभाविक है | अभी भी भौतिकवादी विधि से जो कुछ भी शिक्षा मिलती है, उसमें चलते हुए उन्माद और अपराध कार्य सम्मानित हुआ | जो इसको पढ़कर के क्रियान्वयन करते हैं उन लोगों को ज्यादा से ज्यादा आर्थिक लाभ होता हुआ देखने को मिलता है | इसी क्रम में मानव जात लहट गया | इसलहटाई में अपराध के अलावा दूसरा कुछ हाथ नहीं लगा | उन्माद के अलावा दूसरा कुछ मिला नहीं | इसके पहले जो तैयार हुआ अर्थात भौतिकवाद के पहले आदर्शवाद तैयार हुआ, आदर्शवाद रहस्य में फंस कर संकटग्रस्त होगया | संकट में रहते हुए कल्पना विधि से भौतिकवाद जितना भी वैध माना उसको अपराध माना जिसके लिये नरक का कल्पना दिया है |

ये सब बातों को देखने से इतना लम्बी विगत से मानव को पहचानना सम्भव नहीं हुआ तभी विकल्प की आवश्यकता आयी | विकल्प विधि से मानव विकसित चेतना का अनुभव कर सकता है | ये शिक्षा विधि से सम्पन्न होता है | विकल्प विधि से पारंगत होना हर व्यक्ति चाहता है | इसको अच्छी तरह से परिशीलन किया है | धरती पर ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी तीन प्रजाति के आदमी को देखा जा सकता है | इन तीनों प्रकार के आदमी विकल्प को स्वीकारता है | इसे अच्छी तरह से देखने के बाद संसार के लिये अर्पित किया है | बिना किसी पैसे के | हम स्वयं समझदारी और श्रम के साथ जीते हैं | इसीलिये विकल्प में लिखा है- समझदारीपूर्वक समाधान है, श्रमपूर्वक समृद्धि है | समृद्धि का आधार केवल धरती है | मानव शाकाहारी है | होने के आधार पर लिखा है | दो ही प्रकार का आहार पद्धति होना देखा गया है जीवों में | बाघ मांसाहारी है | गाय, भेड़, बकरी ये सब शाकाहारी है | इन सब को जांचने से पता चला, मांसाहारी जीवों का दाँत और नाखून अलग ढंग का बना है | आंत का लम्बाई छोटा देखा शाकाहारी जीवों के आंत से |

शाकाहारी जीवों का आंत लम्बी दिखा | यद्यपि मैं शाकाहारी होने से आंतों को परीक्षण नहीं किया हूँ; परीक्षण करने वाले बताते हैं | इसको भले प्रकार से समझा जा सकता है | ये सब बातों को सूचना के रूप में पाकर विकल्प लिखा है | ये

कोई जरूरी नहीं है हर बात को प्रयोग करना | सूचना से, अनुमान से बहुत सारा व्यर्थ की बातों को स्वीकारा जा सकता है, नकारा जा सकता है | इस क्रम में अथवा इसी क्रम में विकल्प का रचना हुई | विकल्प का रचना में यह स्पष्ट होता है कि विकसित, जागृत चेतना का स्वरूप क्या है, प्रयोजन क्या है | प्रयोजनों के रूप में यह समझ में आया कि अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था, परिवार में समृद्धि, समाधान अथवा परिवार के रूप में समाधान, समृद्धि | समाधान समझदारी से, समृद्धि श्रम से होना ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का आधार है | परिवार में समाधान, समृद्धिपूर्वक जीना सहज है; जिससे समृद्धि विधि से अखण्ड समाज, समाधान विधि से सार्वभौम व्यवस्था होना पाया गया |

इसी आधार पर विकल्प का प्रस्तुति है | विकल्प विधि से विकसित चेतना को मानव यदि अपनाता है अधिकांश संख्या में, तभी अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था होता है | इसके लिये आवश्यकीय विकल्प है | विकल्प से संविधान तक लिखकर के दिया है | इस रचना से अथवा इस रचना सम्बंधी ज्ञान से हर मानव परिवार अथवा हर देश कालीय परिवार समाधान, समृद्धिपूर्वक जीना सहज है | इसको भले प्रकार से जांचने के बाद संसार में मानव के सम्मुख प्रस्तुत किया है | अभी तक हिन्दी में प्रस्तुत किया है | इसमें यह कहा गया है कि हर भाषा में इसे समझा जा सकता है, जिया जा सकता है | इस ढंग से यह पूरा विचार मानवतावादी होना हो गया | इसी क्रम में बिना किसी स्वार्थ के मानव के सम्मुख प्रस्तुत किया | अभी तक हिन्दी में प्रस्तुत किया है, इंग्लिश में प्रस्तुत किया जा रहा है | स्थानीय रूप में पंजाब में पंजाबी भाषा में कहने का प्रयत्न हो रहा है | महाराष्ट्र में मराठी भाषा में प्रस्तुति की तैयारी हो रही है | यह सब स्वयंस्फूर्त काम है | इसमें किसी का मजबूरी अथवा पैसे का बात नहीं है | इसको परिशीलन किया जा सकता है सर्वदेश काल में, सर्वभाषा में | ये विकल्प समझे बिना किसी भाषा में बोला नहीं जा सकता | समझने के बाद किसी भी भाषा में बोल सकते हैं | इस प्रकार भाषा प्रधान होने के स्थान पर समझदारी प्रधान हुआ | समझदारी के रूप में सर्वदेश कालीय, सर्वभाषी, सर्जन सम्मत विधि से प्रस्तुत होने के आधार पर अखण्ड समाज होने की सम्भावना है | इसको भली प्रकार से समझा गया है |

इसी उद्देश्य से विकल्प को प्रस्तुत किया है | विकल्प ही मानव को अपराध और भ्रम से मुक्ति दिला सकता है | इसका नाम दिया है विकसित मानव चेतना | विकसित मानव चेतना अपने स्वरूप में मानव का ही स्वत्व है | व्यक्तिवादी स्वत्व नहीं होता है | इसीलिये इसे बिना किसी प्रतिफल के प्रस्तुत किया है | इसे शुद्धतः अनुसंधान कहा | अनुसंधान का मतलब परम्परा में जो प्रचलित नहीं है, आवश्यक होता हो उसे प्रस्तुत किया है | इसी क्रम में आदर्शवाद के समय में जो जो कम था अथवा अभाव था मानव का अपेक्षा के अनुसार; वह सब को अनुसंधान विधि से ही, दूसरा क्रम से प्रौद्योगकी विधि से ही सर्वसुलभ करने का कार्यक्रम व्यापार विधि से हुआ | व्यापार विधि में मुद्रा की बात आयी, क्योंकि वस्तु को ले जाने, ले आने का मार्ग, वाहन का अभाव था | व्यापार विधि मानसिकता में आ चुकी थी; तब विनिमय करके देखा, व्यापार में चले गये | फलस्वरूप पीछे हो गये | विनिमय का स्वरूप न्यायिक होना बहुत आवश्यक है | न्यायिकता को बताया है |

जो देना, लेना दो क्रिया का कार्यक्रम को विनिमय कहा है | देने वाला भी दोनों का मूल्यांकन कर सके, लेने वाला भी कर सके | दोनों का सहमति होने का स्थिति में विकल्प होता है | इस क्रम में कार्यक्रम तैयार किया | इसमें १० परिवार के साथ हर परिवार विनिमय कर सकता है अथवा १०० परिवार के साथ कर सकता है | १०० परिवार एक ग्राम में होना पाया जाता है | फलस्वरूप अर्थात विकसित चेतना सम्पन्नता सहित सोच विचार सुलभ रहता है | इस सोच विचार के अनुसार जीने से अखण्ड समाज नित्य उत्सव के रूप में प्राप्त होता है | यदि अखण्ड समाज होता है, अखण्ड समाज व्यवस्था होना स्वाभाविक

रहा | अखण्ड समाज व्यवस्था विधि से मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना प्रमाणित हो जाता है | हर परिवार में समाधान, समृद्धि, अखण्डता, सार्वभौमता में भागीदारी होना सहज होता है | इसी क्रम में पूरा विकल्प को प्रस्तुत किया है | इसी क्रम में मानव सुखी होने की व्यवस्था है | अभी तक मानव सुखी होना जानता ही नहीं | हर प्रकार से व्यवस्था को सोचा, हर प्रकार से व्यवस्था दिया | सभी व्यवस्थाएं कहीं न कहीं अपराध और उन्माद के आधार पर कुछ लोग स्वीकारते रहे, कुछ लोग नहीं स्वीकारते रहे | इसी प्रकार सभी संविधान फँसा हुआ है |

हर संविधान के साथ एक से अधिक पार्टियां होना, जन मानस के साथ कार्य करना स्थापित हो चुका है | हर संविधान के साथ किये जाने वाले कार्य में कुछ लोग सहमत, कुछ लोग असहमत रहते हैं | प्रधान रूप में जो भागीदारी करते रहते हैं, वो सहमत होते हैं | जो भागीदारी नहीं करते हैं, उन लोगों में विभाजन रहता ही है | सब जगह में साम्य रूप में यह देखा जाता है कि न्याय चाहते हैं | उसमें दो भाग हैं | एक भाग अपने मन चाहे विधि से न्याय चाहता है | वही राज्य करते हैं | राज्य में भागीदारी करते हैं | बड़े-बड़े पदों में रह कर अच्छा बुरा कार्य करते हैं | यह अभी तक अध्ययन में आ चुकी है | इसी क्रम में अखण्डता, सार्वभौमता की आवश्यकता आयी | इसी के लिये विकल्प प्रस्तुत हुआ | विकल्प विधि से ही अखण्डता, सार्वभौमता सहज सुलभ होना पाया गया | इसमें यह देखा गया;

वृद्धावस्था के लोगों में अस्वीकृति, प्रौढावस्था में स्वीकृति, युवावस्था में भागीदारी की सम्भावना बनी हुई है | इसको हर देशकाल में जाँचा जा सकता है | इससे विकसित चेतना प्रमाणित होता है | इसको भले प्रकार से जाँच कर के मानव के सम्मुख प्रस्तुत किया; जिससे ही मानव के सुखी होने की चिरकालीन अपेक्षा पूरी हो सकती है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)